VSA
A Pure English Medium School
VIDYA SHREE ACADEMY
SR. SEC. SCHOOL
An English Medium Co.Ed. School | Science & Commerce
'Little Steps'
Pre Primary wing of VSA
W : www.vsajaipur.com | E : vsajaipur@gmail.com M. : +91 9460356652, 8058999828
Add. : 84, Krishna Vihar, Behind Narayan Niwas, Gopalpura Bypass, Jaipur - 302015
/vsajaipur | /vsajaipur | /vidyashreeacademy | /vsa_jaipur

Subject-Hindi Class 12 topic: अपठित पद्यांश

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(2) मेरी भूमि तो है पुण्यभूमि वह भारती,
सौ नक्षत्र-लोक करें आके आप आरती।
नित्य नये अंकुर असंख्य वहाँ फूटते,
फूल झड़ते हैं, फल पकते हैं, टूटते।
सुरसरिता ने वहीं पाई हैं सहेलियाँ,
लाखों अठखेलियाँ, करोड़ों रंगरेलियाँ।
नन्दन विलासी सुरवृन्द, बहु वेशों में,
करते विहार हैं हिमाचल प्रदेशों में।
सुलभ यहाँ जो स्वाद, उसका महत्त्व क्या ?
दु:ख जो न हो तो फिर सुख में है सत्त्व क्या ?
दुर्लभ जो होता है, उसी को हम लेते हैं,
जो भी मूल्य देना पड़ता है, वही देते हैं।
हम परिवर्तनमान, नित्य नये हैं तभी,
ऊब ही उठेंगे कभी एक स्थिति में सभी।
रहता प्रपूर्ण हमारा रंगमंच भी,
रुकता नहीं है लोक नाट्य कभी रंच भी।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2.

(क) कवि ने पुण्य-भूमि किसे और क्यों कहा है ?

(ख) हिमाचल प्रदेश की क्या विशेषता बताई गयी है ?

(ग) "दुःख जो न हो, तो फिर सुख में सत्त्व क्या ?"-इस कथन का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

(घ) पृथ्वीवासियों को नित्य नये' क्यों कहा गया है ?

Scanned with CamScanner

उत्तर:

(क) कवि ने भारतं भूमि को पुण्य-भूमि कहा है क्योंकि वहाँ आकर सैकड़ों नक्षत्र लोग उसकी आरती उतारते हैं। वहाँ नित्य नवजीवन के अंकुर फुटते हैं।

(ख) नन्दन वन में विहार करने वाले देवता अनेक वेशों में आकर हिमालय प्रदेश में विहार करते हैं।

(ग) सुख का आनन्द दु:ख सहने के पश्चात् ही पता चलता है। यदि जीवन में सुख ही सुख हो और दु:ख हो ही नहीं तो सुख का महत्त्व ही कुछ नहीं रह जाता। विधाता ने संसार को सुख-दुखमय बनाया है।

(घ) परिवर्तन सृष्टि का नियम है। धरती पर हर समय परिवर्तन होते रहते हैं। पुराना जाता है उसको स्थान नया ले लेता है। अत: यह संसार नित्य नया बना रहता है। इस कारण पृथ्वीवासियों को नित्य नये कहा गया है।

Scanned with CamScanner